(ग) अखाद्य तेलों से चर्बी युक्त अम्ल पदार्थ तथा ग्लसरीन बनाने के बारे में अब तक क्या प्रगति हुई है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) स्टीयरिक एसिड का उत्पादन बढ़ाने के लिये निम्न कदम उठाये गये है :—

(१) इस उद्योग को तटकर सरक्षण प्रदान कर दिया गया है ।

(२) पुराने आयातको द्वारा स्टीयरिक एसिड के आयात पर रोक लगादी गयी है और वास्तविक उपयोक्ताओं को सीमित आधार पर आयात करने के लिये लाइसेंस दिये जाते हैं ।

(३) गन्ने कच्चे मालो जैसे ताड के तेल और चरबी का आयात करने की अब भी अनुमति दी जाती है ।

(४) स्टीयरिक एसिड बनाने के लिये आधुनिक मशीनों के आयात की अनुमति भी दी जाती है ।

(ख) स्टीयरिक एसिड उद्योग इस समय प्रत्यक्षरूप मे साबुन उद्योग से संबंधित नही है क्योकि वह केवल वनस्पति तेलो का ही प्रयोग कर रहा है ।

(ग) अखाद्य तेलो मे चर्बी युक्त अम्ल पदार्थ बनाने की संभावनाओ की जाच पडताल की जा रही है ।

नाइट्रो-सेलूलोज और पी० वी० सी० लेदर क्लाथ

१८२६. श्री रा० स० तिवारी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश मे इस समय नाइट्रो-सेलूलोज और पी० वी० सी० लेदर क्लाथ का कुल कितना उत्पादन हो रहा है; और

(ख) इसकी देश में कितनी खपत है और विदेशों को कितना भेजा जाता है ।

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) तथा (ख). एक विवरण जिस में यह जानकारी दी गयी है, सभा के पटल पर रख दिया गया है । [देखिये परिशिष्ट ४, अनुबन्ध संख्या ८०]

पुस्तकों का आयात

१८२७. श्री रा० स० तिवारी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) गत वर्ष विदेशों मे कितनी पुस्तकों का आयात हुआ; और

(ख) इस आयात के कारण भारत को कितनी विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ी ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) से (ख). कितनी संख्या में पुस्तकों का आयात हुआ, यह जानकारी उपलब्ध नहीं है क्योंकि किताबों के आयात के आकड़े परिमाण मे दिये जाते है । १९५६–५७ में १,१३,३४,००० रु० की ३६,०७१ हंडरवेट पुस्तके, मुद्रित सामग्री, और पैम्फलेटें आयात की गयी ।

मशीनी औजारों के कारखाने

१८२८. श्री रा० स० तिवारी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) मशीनी औजार बनाने के लिये कितने संगठित कारखाने इस समय चल रहे हैं और उनका राज्य-वार ब्यौरा क्या है ;

(ख) मशीनीं औजार बनाने की दृष्टि से कौन से राज्य आगे बढ़े हुए हैं और क्यों ; और

(ग) जो राज्य इस दृष्टि से पिछड़े हुए हैं, वहां स्थिति सुधारने के लिये क्या किया जा रहा है ।

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है। [देखिये परिशिष्ट ४, अनुबन्ध संख्या ८१]

(ख) और (ग). सरकारी क्षेत्र में कारखाने कहां खोले जाएं, इसका निर्णय कई बातों को देख कर किया जाता है हालांकि इन कारखानों को जहां तक संभव होता है, सभी राज्यों में रखने की कोशिशें की जाती हैं। उद्योग (विकास तथा नियमन) अधिनियम १९५१ के अधीन नयी औद्योगिक योजनाओं को मंजरी देते समय, उस योजना की उपयोगिता और टैकनीकल दृष्टि से उसके औचित्य का ख्याल रखने के साथ यह भी ख्याल रखा जाता है कि उसे किस क्षेत्र में खोला जाये। उद्योगों को निम्न बातें देखते हुये विभिन्न क्षेत्रों में खोलने की कोशिश की जाती है :— (१) कच्चे माल की सुलभता (२) पानी तथा बिजली की उपलब्धि (३) परिवहन की सुविधाएं और (४) खपत के केन्द्रों से निकटता।

शार्क मछली अथवा मछली का तेल

१८२९. श्री आसर : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि वनस्पति तेलों में विटामिन "ए" की कमी को पूरा करने के लिये शार्क मछली या मछली का तेल मिला दिया जाता है ;

(ख) यदि हां, तो १९५१-५३, १९५५ और १९५६ में अलग-अलग किस-किस कारखाने में कितना-कितना शार्क मछली या मछली का तेल काम में लाया गया ;

(ग) १९५१-५३, १९५५ और १९५६ में शार्क मछली अथवा मछली के तेल का भाव क्या था ;

(घ) क्या यह सच है कि लेमन ग्रास से भी विटामिन "ए" तैयार किया जाता है ;

(ङ) यदि हां, तो १९४८-५१ और १९५४-५६ में लेमन ग्रास से कितना और कितनी कीमत का विटामिन "ए" तैयार किया गया ; और

(च) इन वर्षों में वनस्पति घी तैयार करने वाले किन किन कारखानों में कितनी कितनी मात्रा में इसकी खपत हुई ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) जी, नहीं; इस काम के लिये सिर्फ कृत्रिम विटामिन "ए" का प्रयोग किया जाता है।

(ख) प्रश्न ही नहीं उठता।

(ग) काड लिवर आइल (जो आयातित होता है) के भाव निम्नानुसार थे :—

१९५०-५१ १.७१ रुपये प्रति पौ०

१९५३-५४ १.३७ रुपये प्रति पौ०

१९५४-५५ ०.९३ रुपये प्रति पौ०

१९५५-५६ १.५३ रुपये प्रति पौ०

जहां तक शार्क लिवर आइल का संबंध है, उड़ीसा में १९५४-५५ में शार्क लिवर आइल बिकने के भाव ही प्राप्त है जो निम्नानुसार थे :—

(१) विटामिन "ए" के १२००० आई० यू० वाला तेल ८ रु० प्रति पौण्ड

(२) ६००० आई० यू० वाला तेल ४॥ रु० प्रति पौण्ड